साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

तलाश इंसान की

राकेश कुमार वर्मा *(आवारा बंजारा)*

क्यू अंधार में जी रहा,
गैरों का पानी पी रहा,
अपनी पहचान छुपाई है,
यही तो आज लड़ाई है.....।

मुझे तलाश उस इंसान की,
जो करे तलाश इंसान की.....।

समय चक्र में कही खो गया,
आज इंसान जानवर हो गया,
मै ढूंढ रहा उस इंसान को,
देह लिए इंसान हो.....। इंसान ! ..... जो मिट सा गया,
किताबो में सिमट सा गया,
वो देव भूमी की पहचान था,
ग्रन्थ कहते है, यहाँ भी कोई इंसान था...।

मुझे तलाश उस इंसान की,
सकल धरे भगवान की.....।

वो जो पोरुष की निशानी हो ,
देह सुखी, मगर सीना पानी हो,
कर्म-वर्त अपना निभाता हो,
वचनों की लाज़ बचाता हो.....।

काम-कटुता का ज्ञाता हो,
मगर नारी को मान दिलाता हो,

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

जो मर्यादा की ढाल हो,
उसके रहते न कोई निढाल हो.....।

मुझे तलाश उस इंसान की,
जो करे तलाश इंसान की.....।